बरेली, सोमवार
8 जनवरी, 2024
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16

दैनिक जागरण

रविवार को एक शाम प्रोफेसर वसीम बरेलवी के साथ के मंच पर कार्यक्रम प्रस्तुत करती गजलकार • जागरण आर्काइव

कौन सी बात कहां कैसे कही जाती है, ये सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है...

जागरण संवाददाता, बरेली : कौन सी बात कहां कैसे कही जाती है, ये सलीका हो, तो हर बात सुनी जाती है... अंतरराष्ट्रीय शायर प्रोफेसर वसीम बरेली की गजल के इस शेर के साथ एक शाम प्रोफेसर वसीम बरेलवी के साथ कार्यक्रम का आगाज रविवार शाम को एसआरएमएस रिद्धिमा में हुआ। शायरी और गजल के कद्रदानों के लिए आयोजित महफिल ए गजल में वसीम बरेलवी की एक से बढ़कर एक गजलों की प्रस्तुतियां दी गईं।

अतिथि गायक डा. रीता शर्मा ने सुनाया कि गजल शब ए मैखाना ये जो दिल पे गरा गुजरेगी सुनाया। डा. अनुज कुमार ने सुनाया मैं इस उम्मीद पे डूबा कि तू बचा लेगा, इससे ज्यादा मेरा इम्तिहान क्या लेगा सुनाया। डा. रजनी अग्रवाल और स्नेह आशीष दुबे ने सुनाया, ज़रा सा कतरा कहीं आज अगर उभरता है, समुंदरों ही के लहजे में बात करता है। डा. रजनी, डा. अनुज, पंखुड़ी गुप्ता, शालिनी पांडेय और स्वाक्षी अग्रवाल ने अपने साये को इतना न समझाने, मैं आसमा पे बहुत देर, दूर से ही बस दरिया दरिया लगता है को प्रस्तुत किया। इंदु परडल और रोनी फिलिप्स ने मुहब्बत नासमझ होती है समझाना जरूरी है, जो दिल में है आंखों से कहलाना जरूरी है...। प्रियंका ग्वाल और स्नेह आशीष दुबे ने सुनाया हजारों कांटों से दामन छुड़ा लिया मैंने, अना को मारकर सब कुछ बचा लिया मैंने...। इंदु परडल, हिमांश चंद्रा, डा. रीता शर्मा ने अपने हर हर लफ्ज का खुद आईना हो जाऊंगा, उस को छोटा कह के मैं कैसे बड़ा हो जाऊंगा सुनाकर समां बांध दिया।

इससे पहले रिद्धिमा के खचाखच भरे हाल में प्रोफेसर वसीम बरेलवी ने अपने काव्यपाठ के मंच की 62 वर्षों की यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने कहा कि छह फरवरी 1962 को बरेली में मुंबई से महेंद्र कपूर गजल गाने के लिए आए थे। उस समय से अब तक तमाम महफिलें सज चुकी हैं। इस दौरान एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक और चेयरमैन देवमूर्ति, आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, डा. अवनीश यादव, डा. आलोक खरे, डा. अनुराग मोहन आदि मौजूद रहे।

रविवार शाम अंतरराष्ट्रीय शायर प्रोफेसर वसीम बरेलवी को सम्मानित करते एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक देवमूर्ति • जागरण आर्काइव

एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को प्रोफेसर वसीम बरेलवी की मौजूदगी में सजी महफिल ए गजल, गजलकारों ने सुनाई एक से बढ़कर एक गजलें